इंटरनेट और हिंदी भाषा की भूमिका

प्रा. बबन दामोदर सदामते
हिंदी विभाग प्रमुख, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पलूस, तहसिल पलूस, जिला सांगली

विश्व में भाषा की अस्मिता महत्त्वपूर्ण विषय बन गया हैं। पिछले दो दशकों से भाषाई संघर्ष चल रहा हैं। जैसे–जैसे वैश्वीकरण का प्रभाव बढ रहा हैं वैसे–वैसे भाषा का मसला अपनी गहराईयों का विश्लेषण करते हुए निखर रहा हैं। हिंदी भाषा की संघर्ष यात्रा अनवरत रूप से जारी हैं। वैश्वीकरण का यह दौर प्रत्येक देश के शक्ति परिक्षण का हैं। जिसमें अभिव्यक्तियॉं अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिकाऍं निभाएंगी। जिस राष्ट्र का संप्रेषण जितना प्रखर और प्रासंगिक होगा, बाजी उतनी ही सुगम तौर पर उस देश के हाथ में होगी। अतः भूमंडलीकरण में भाषाओं के वर्चस्वता की अघोषित एवं अप्रत्यक्ष लड़ाई जारी हैं।

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में मीड़िया के माध्यम से हिंदी सारी दुनिया में पहॅूंच रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनीयॉं दक्षिण एशिया के बाजार में प्रवेश करने हेतु हिंदी की उपयोगिता में उत्त्रोत्तर बढोत्तरी करते जा रही हैं। भारत देश की तेज गति से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था ने विश्व को अपनी ओर देखने के लिए विविश कर दिया हैं। हमारा देश हिंदी की मानसिकता से अभी भी जुझ रहा हैं, जबकि विश्व में हिंदी की लोकप्रियता और उपयोगिता का विश्लषण हिंदी को एक उर्जापूर्ण भविष्य की ओर ले जा रहा हैं। इसमें इटरनेट की सहभागिता सबसे ज्यादा हैं।

हिंदी भाषा तथा साहित्य इंटरनेट के जरिए देश तथा विदेश में बढे पैमाने पर फैल रहा हैं। उद्‌गम, कृत्या, प्रतिध्वनि, लेखनी, हिंदी परिचय, सृजनगाथा, क्षितिज, ताप्तिलोक, छाया, हिंदी नेस्ट, अभिव्यक्ति, गर्भनाल, अनुभूति आदि जैसी कई वेब पत्रिकाऍं हिंदी साहित्य के बेहतर छवि को निरंतर निखार रही हैं। इन पत्रिकाओं को विदेशों से बड़ा पाठक वर्ग मिल रहा हैं। अनेक पत्रिकाऍं तथा ब्लॉग हिंदी के महत्त्वको दर्शाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

सूचना और प्रोद्योगिकी के ताल–मेल से ही हिंदी के विकास की कल्पना की जा सकती हैं। इंटरनेट की दुनिया में हिंदी का साम्राज्य फैलता जा रहा हैं। प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक श्मिट का मानना है कि "अगले पांच से दस सालों में हिंदी इंटरनेट पर छा जाएगी और अॅंग्रेजी तथा चीनी के साथ इंटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी।"[1] हिंदी का प्रभाव इंटरनेट के माध्यम से दुनिया में विस्तृत हो रहा हैं। दुनिया के लगभग एक सौ बीस देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। इनमें से बहुत बड़ी संख्या इंटरनेट के जरिए हिंदी के संपर्क में आती हैं।

इंटरनेट की आधुनिक तकनीक ई–बुक, ई–मेल, ई–चॅट, ई–पत्रिका, ई–पुस्तकालय, ई–वीडियो–ऑडियो पत्रिकाऍं, पॉडकास्टिंग, ब्लॉग, विकीपीडिया आदि माध्यमों में हिंदी अपना स्थान बना रही हैं। हिंदी में प्रकाशित लगभग सभी बड़े समाचार पत्र नेट पर उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर हिंदी वेब पत्रिकाओं की विशेषता बनाते हुए रति सक्सेना लिखती हैं। "वेब पत्रिका साहित्य को विकेंद्रीकण की प्रवृत्ति प्रदान करती हैं, जो उसके विकास और व्यापकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। वेब हर किसी को उपलब्ध हो सकता है अर्थात लिखना और छापना हर एक के लिए सुलभ हो सकता हैं। शर्त यह है कि उसमें लिखने का जुनून हो। यह एक ओर तो साहित्य को व्यापकता दे सकता है, दूसरी ओर विविधता। हर लम्हा, हर पल साहित्य बन सकता हैं। अब साहित्य को पैदा करने के लिए कारखाने की जरूरत नहीं है और न ही चाहिए किसी मठाधीश का शासन। ऐसा भी नहीं कि किसी खास तरीके की पत्रिका में छप गए और प्रतिष्ठान मान लिए गए, नहीं तो ऱ्हास की ओर उन्मुख हो चले।"[2] इंटरनेट के माध्यम से हिंदी के भारतीय और अप्रवासी लेखकों को एक मंच से विश्व साहित्य के मूल्यांकन की दस्तक देने का मौका मिला हैं। हिंदीतर भाषाओं के साहित्य को अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य को विश्व साहित्य के समानांतर खड़ा करने का प्रयास इंटरनेट की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

व्यापार में इंटरनेट का व्यवसाय तेजी से बढ रहा हैं। कई बिलियन डॉलरों की कमाई इंटरनेट के माध्यम से सिर्फ विज्ञापनसे हो रहा रही हैं। यह तथ्य चौकानेवाला हैं कि 'प्रभासाक्षी' जैसे हिंदी के पोर्टल पर पता चलता हैं कि इस पर प्रतिमाह एक करोड़ हिट्स का आकडा प्राप्त होता हैं। सर्च इंजिन गूगल पर हिंदी राईटर्स प्रविष्टि मांगने पर 1,20,000 प्रविष्ठियॉं मिल जाती हैं। नेट पर हिंदी के करीब एक कराड पन्ने हैं।"[3] स्पष्ट है कि इंटरनेपर हिंदी की मॉंग बढ रही हैं।

इंटरनेट पर हिंदी के प्रयोग में सबसे बड़ी कठिनाई फॉन्ट की हैं। कुछ भारतीय तथा अप्रवासी भारतीयों ने हिंदी को यंत्रानुकूल बनाने का प्रयास किया हैं। हिंदी फॉन्ट में एकरूपता लाने के प्रयास से ही यूनिकोड की उपलब्धि ने हिंदी फॉन्ट में एकरूपता लाने का प्रयास किया है। किंतु यह उपक्रम अभी भी अधूरा हैं।

मीड़िया में भाषा के 'हिंगलिश' रूप की चर्चा जोरों पर हैं। हिंदी प्रेमी इसमें अधिक संवेदनशील नजर आते हैं। इंटरनेट पर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक उथल–पुथल की चर्चा या किसी के साक्षात्कार का ब्यौरा दिया जाता है तब यह 'हिंगलिश' रूप ध्यान खिंच लेता हैं। भाषा शुद्धता का प्रश्न यहॉ गंभीर होकर उभरता हैं। इस बारे में अनेक लोगों की अलग–अलग धारणाए हैं। धीरेंद्र सिंह के अनुसार – ''सच तो यह हैं कि हिंदी बिगड़ नहीं रही हैं बल्कि भूमंडलिय स्तर पर अपने को विभिन्न रूपों में सजा–सॅवार रही हैं। हॉ, यह कटु यथार्थ हैं कि हिंदी के वर्तमान मौलिक रूप को बनाए रखने का दायित्व हम सब पर हैं तथा इन भाषाई झोकों और अंधड़ों से गुजरते हुए हिंदी को हम जिस कलेवर में ढाल पाऍगे हिंदी का वही रूप होगा। वैसे इस हिंगलिश से बच पाना भी कठीन कार्य है।''[4] स्पष्ट है कि इंटरनेट की भाषा के प्रति पुराना भावूतकतापूर्ण आकर्षण पालना अव्यवहार्य होता जा रहा हैं।

भाषा के स्तर पर अनेक बदलाव होने की संभावना ज्यादा मात्रा में प्रखर हो रही हैं। डॉ. शशि शर्मा के अनुसार – ''जो भाषा जितनी रोजी–रोटी दे सकती है वह उसी प्रतिशत में स्वीकार्य हैं। जनजीवन में अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग अब आम बात हैं। आनेवाली नयी हिंदी प्रांतीय भाषाओं के रूपों में मिश्रित होगी। इस नए रूप की हिंदी में ध्वनियों के नाना रूप बिगड़ सकते हैं। हिंदी का लिंग विधान हिंदीतर लोगों के लिए बहुत कठिन सिद्ध होता जा रहा है। विकास प्रक्रिया में हिंदी अपने व्याकरणिक बंधनों से मुक्त होनेवाली है।''[5] कहना सही होगा कि भविष्य में व्यावसायिक दृष्टिकोण के अनुरूप हिंदी भाषा में लचिलापन आने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

भविष्य में इंटरनेट पर ध्वनि और शब्दों के साथ–साथ चित्र भी होंगे। व्यावसायिक इस बात को भी ध्यान में रखेंगे कि शब्द मजेदार और बांधनेवाले हो। परिणामतः शब्दावली नये रूपों में उभरकर आएगी। संक्षेपाक्षर एवं कूट भाषा बनने लगेगी। संकेतों में वाक्य समझ लिए जाऍगे। इक्कीसवी सदी की वैश्विक स्थिति में मुनाफा और तेज गति यही अंतिम सच बन गया हैं। हिंदी भाषा को किसी भी हालत में इन्ही के बीच अपना स्थान बनाना हैं। डॉ. अर्जुन चव्हाण के अनुसार – ''आज सूचना एवं प्रोद्यागिकी के विभिन्न उपकरणों में हिंदी को भले ही प्रेमपूर्वक न अपनाकर उसकी व्यावसायिक आवश्यकता को देखकन अपनाया हो किंतू इससे जनसंचार के इलेक्टानिक माध्यमों में हिंदी का प्रवेश उसके भविष्य के लिए सुखद सिद्ध होगा।''[6] कहना न होगा कि इंटरनेट की आवश्यकता के अनुरूप हिंदी को ढालने के प्रयास जारी रखते हुए उसकी गति तेज करनी होगी। 21 वी सदी में इंटरनेट के हिंदी की छवि कुछ अलग होगी यह निश्चित हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सं. रतनकुमार पाण्डेय – 'अनभै', त्रैमासिक, जुलाई–सितंबर, 2007, पृ. 34
2. डॉ. रति सक्सेना – संपादकीय – www.krutya.in/0404/hin/myvoice सितंबर, 2008
3. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल – मीड़िया विमर्श, पृ. 31
4. सं. रतनकुमार पाण्डेय – 'अनभै', जुलाई–सितंबर, 2007, पृ. 36
5. महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई, द्विशताब्दी समारोह विशेषांक, पृ. 106
6. महाराष्ट्र हिंदी प्रचार सभा – 'संचारिका' संयुक्तांक जनवरी, फरवरी, मार्च, 2005, पृ. 9